

# LOK SABHA DEBATES

I

## LOK SABHA

Monday, December 8, 1980/Agrahayana 17, 1902 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[MR. SPEAKER in the Chair]

### ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

DR. SUBRAMANIAM SWAMY: I have given you notice under Rule 389. It is a matter of grave national importance. I saw you in the Chamber.....

MR. SPEAKER: I have disallowed your notice. You can come under Rule 377. I will allow you.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY: On Mr. Morarji Desai matter.  
(Interruptions)\*\*

MR. SPEAKER: Nothing should be recorded.

रुई के भाव

\* 286. श्री फूल चन्द वर्मा : क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि भारत में रुई के भाव विश्व के बाजार के भाव की तुलना में काफी नीचे हैं ; और

(ख) यदि हां, तो उसके क्या कारण हैं और इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी का सम्पूर्ण व्यौरा क्या है ?

2

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE AND RURAL RECONSTRUCTION (KUMARI KAMLA KUMARI): (a) The prices of cotton in India are somewhat lower as compared to the prices thereof in world market.

(b) In the world market, there is an imbalance between demand and supply because the world output of cotton in the current year is estimated to be nearly one million bales less than the previous year. In particular, U.S.A. which is a major exporter of cotton, this year is having cotton crop which is about 20 per cent lower than the previous year.

श्री फूल चन्द वर्मा : अध्यक्ष महोदय, मैंने अपने मूल प्रश्न में यह जानना चाहा था कि भारत में पैदा होने वाली कपास का मूल्य विश्व के बाजारों में, जो काफी नीचे हैं, उसका क्या कारण है। मन्त्री जी ने बताया है कि अमरीका में काटन का उत्पादन 20 प्रतिशत (10 हजार टन) कम हुआ है तब तो भारत की काटन का अधिक दाम मिलना चाहिए था ? विश्व बाजार में अधिक मूल्य क्यों नहीं मिला, इसका कारण मैं जानना चाहता हूँ।

कृषि तथा ग्रामीण पुनर्निर्माण और सिंचाई मंत्री (श्री बहारेन्द्र सिंह राव) : स्पीकर साहब, बाहर की कीमतें हिन्दुस्तान की कीमतों से थोड़ी ज्यादा हैं—यह जवाब हमने दे दिया है। बाहर कीमत ज्यादा मिलेगी अगर हम रुई का एक्सपोर्ट ज्यादा करें, लेकिन इस वकत रुई की ज्यादा एक्सपोर्ट करने की गुंजाइश नहीं है। डोमेस्टिक रिक्वायरमें

\*\*Not recorded.

से जितनी हम फालतू समझते हैं उसको हम एक्सपोर्ट कर रहे हैं। हमारे मुल्क में भी इसकी काफी खपत है। पहले हम यहां की टेक्सटाइल मिलों के लिए इन्तजाम करना चाहते हैं और उसके बाद जिननी फालतू नजर आती है वह साल ब साल एक्सपोर्ट की जाती है।

**अध्यक्ष महोदय :** वे तो पैरिटी की बात कर रहे हैं, ताकि हमारे लोगों को भी कुछ मिल जाए।

**श्री बीरेन्द्र सिंह राव :** यहां की मार्केट का बाहर की मार्केट के साथ पैरिटी का तो मवाल पैदा नहीं होता है, क्योंकि हमारे पास रुई काफी पैदा होती है।

**श्री फूल चन्द वर्मा :** अध्यक्ष महोदय, मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि भारत में रुई का उत्पादन बढ़े और अच्छी क्वालिटी की रुई हम अपने यहां पैदा कर सकें इसके लिए सरकार ने अभी तक क्या प्रयास किए हैं? यहां पर नई-नई किस्म की रुई के बीज आ रहे हैं, इसको हमारे देश के काश्तकार बोयें, ताकि हम रुई के अन्दर आत्म निर्भर बन सकें। अच्छी रुई हम संसार के मार्केट में दें सकें और उसका लाभ हम को मिल सके, इसके लिए मन्त्री महोदय ने क्या प्रयास किए हैं?

**श्री बीरेन्द्र सिंह राव :** स्पीकर साहब, रुई की पैदावार हमारी पिछले सालों के अन्दर काफी बढ़ी है, क्योंकि हाई ब्रीड किस्म की जो कपास है, उसके लिए हमने बीज पैदा किया है और उसका पर-हैबटेयर यील्ड काफी है और उसको आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। बाहर की दुनिया में काटन के कपड़े का इस्तेमाल लक्जरी के तौर पर होता है, वहां ज्यादा सिन्थेटिक फाइबर का इस्तेमाल होता है। हिन्दुस्तान में अपनी खपत के लिए हमारे पास रुई है? आत्मनिर्भर तो हम हैं, लेकिन इसमें कोई शक नहीं है कि हिन्दुस्तान में

ज्यादा रुई पैदा की जा सकती है और इसके लिए बहुत बड़ा स्कोप है। रुई ज्यादा पैदा करके और बाहर के मुल्कों में एक्सपोर्ट करके हम फारेन-एक्सचेंज कमा सकते हैं—इसमें भी कोई शक नहीं है।

**श्री गिरधारी लाल डोगरा :** अध्यक्ष महोदय, मैं मन्नीय मन्त्री जी से यह पूछना चाहता हूँ कि कपड़े की कीमतें तो बढ़ती जाती है, लेकिन काटन की कीमतें नहीं बढ़ती है, कपड़े की मार्केट प्राइस के मुताबिक ग्राहकों को भी तो शेयर मिलना चाहिए?

**श्री बीरेन्द्र सिंह राव :** मिनिमम प्रोक्योरमेंट प्राइम तय करते वक्त इस चीज का ख्याल रखा जाता है। अध्यक्ष महोदय, मैं पहले भी हाउस में अर्ज कर चुका हूँ कि इस मामले में पैरिटी अभी पैदा नहीं हो पाई है... (व्यवधान)... इस वक्त तो मेरे पास फिगरस नहीं हैं कि होलसेल प्राइस-इन्डैक्स टेक्सटाइल का क्या है और रुई का क्या है, यह मैं आगे बता दूंगा।

**PROF. MADHU DANDAVATE:** The hon. Minister must be aware of the fact that yesterday only a peaceful long march of more than 10,000 farmers has begun and one of the issues involved is also the cotton prices. I would like to know from the hon. Minister what exactly is the cost of production as far as commodity of cotton is concerned and what margin they leave over the cost of production while fixing up the price. If they are able to give that formula we will know roughly the elements behind that for fixing the price of cotton.

**SHRI BIRENDRA SINGH RAO:** The cost of production is calculated on the basis of data supplied by various universities and other organisations. This time the Agricultural Prices Commission had recommended a price of Rs. 300 for the common variety of cotton. But the government has increased it by Rs. 4/-. The minimum price fixed for procurement was Rs. 304/-.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : पांच क्यों नहीं किया ?

श्री बीरेन्द्र सिंह राव : जरूरी थोड़े ही होता है हर चीज के लिए पांच करना ।

अध्यक्ष महोदय : वाजपेयी जी से नुसखा निकलवा लिया होता कि शुभ कौन सा होता है ।

**SHRI BIRENDRA SINGH RAO:**  
This was after full consideration of the cost of production. But even then the Government thought that the cotton growers should be given something more.

**PROF. MDHU DANDAVATE:** He has not replied my question. He is only saying that the Agricultural Prices Commission has already fixed up the norm. I am asking the question—what is the norm for fixing up the cost of production? That is exactly what I want.

**SHRI BIRENDRA SINGH RAO:**  
Norms for fixing the minimum procurement price for cotton are well known to everybody. It is the total cost of production which is incurred on production of cotton in the field i.e. rent of the land is taken into consideration. The total investment on all the inputs, fertiliser, water, electricity, seeds and other things is calculated. When the price is fixed, it provides a fair margin of profit also. At present, the cotton prices ruling in the market are much higher than the minimum price fixed.

#### Child Welfare Programme

\*289. **SHRI JANARDHANA POOJARY:**

**SHRI CHINTAMANI PANIGRAHI:**

Will the Minister of EDUCATION AND SOCIAL WELFARE be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the programmes launched so far for the

welfare of children have fallen short of the desired targets;

(b) if so, the reasons therefor; and

(c) the remedial measures taken?

**THE MINISTER OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE (SHRI S. B. CHAVAN):** (a) to (c) Satisfactory progress has been made with the specific programmes for children's welfare that were undertaken by various Ministries of Government of India.

**SHRI JANARDHANA POOJARY:**  
Will the hon. Minister be pleased to State the recommendations of the working group of the Planning Commission regarding primary education, mal-nutrition, etc. for the welfare of children, what is the amount that has been allocated in the Sixth Plan for the same and whether the priority will be given to this?

**SHRI S. B. CHAVAN:** So far as the report of the working group for the Sixth Plan is concerned, I do not think I will be able to furnish the information. Unless the Sixth Plan is finalised, it would be difficult for the Government to say what was the recommendation and what is the final decision.

**SHRI JANARDHANA POOJARY:**  
It is a sad commentary that out of 1000, about 129 children are dying every year in India whereas in foreign countries, science and technology have effectively dealt with this problem of child mortality. I want to know what are the steps that have been taken by the Science and Technology department of our country in this regard.

**SHRI S. B. CHAVAN:** It is a fact that compared to other countries of the world, the rate of mortality in India happens to be definitely more. But if you compare the figures of mortality some 10 years back, we will have to admit the fact that it has